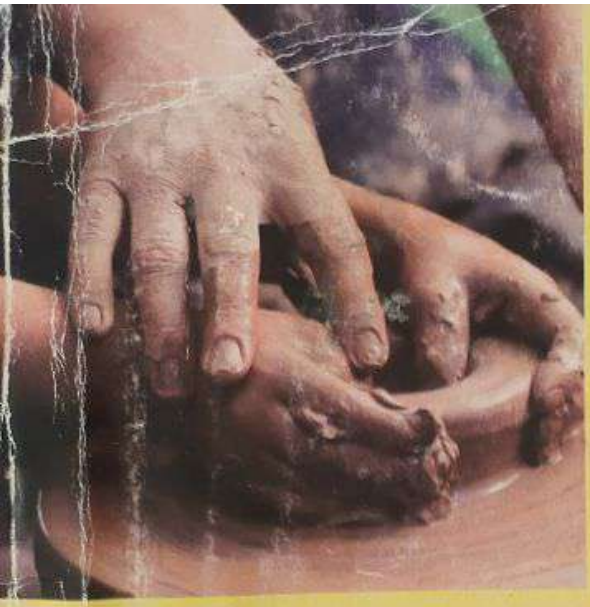

कक्षा 11′ के लिए पाठ्यपुस्तक

मानव पारिस्थितिकी और परिवार विज्ञान

भाग 2

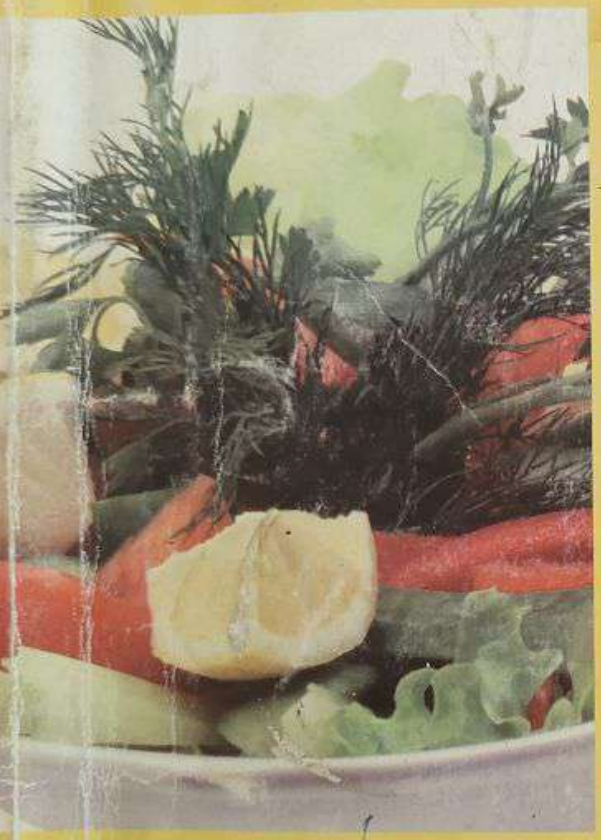

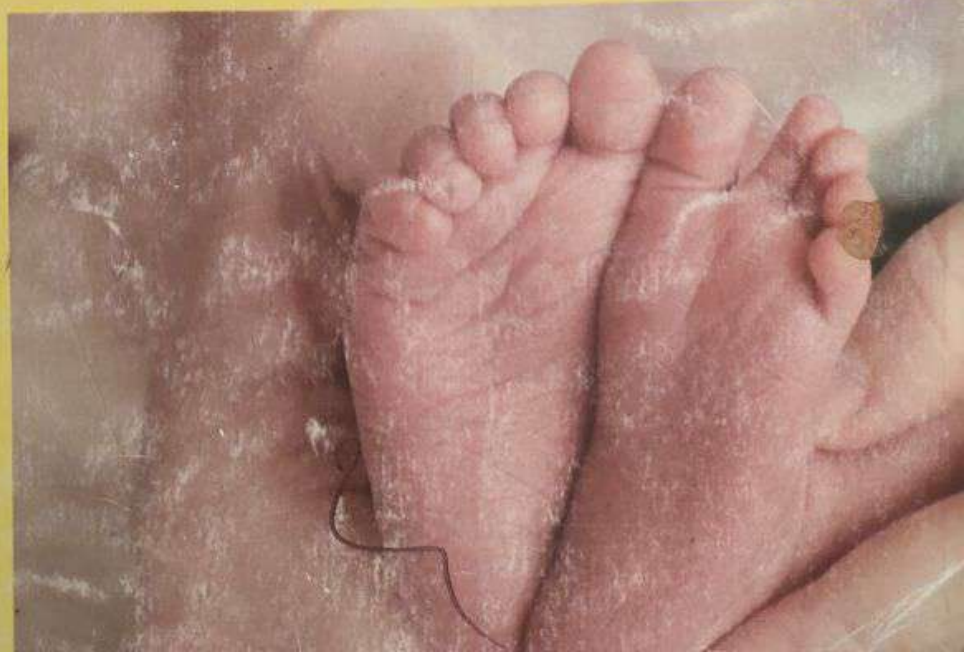

क्यों करते हैं जिन्हें हम पहनते हैं। साथ-ही-साथ अपने कपड़ों के चयन के लिए दूसरे लोगों के कारणों के विषय में भी जानकारी प्राप्त करें। यह जानकारी प्राप्त करने का भी प्रयास करें कि दूसरे लोग किन कारणों के आधार पर अपने कपड़ों का चयन करते हैं।

शालीनता (मर्यादा) – modesty.

कपड़े पहनने का संभवतः सर्वाधिक स्पष्ट कारण यह है कि हमारे समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए कपड़े पहनना अनिवार्य है। हम मर्यादावश भी कपड़े पहनते हैं। आप शायद जानते हैं कि छोटे बच्चे बिना कपड़े पहने भी इधर-उधर घूमते हैं और उन्हें शर्म महसूस नहीं होती है। अपने शरीर को ढँक कर रखने की आवश्यकता के बारे में उन्हें सिखाना पड़ता है।

मर्यादा संबंधी धारणाएँ उस समाज द्वारा बनाई जाती हैं, जिसमें हम रहते हैं। जो एक समाज में शालीनता समझी जाती है संभवतः वह दूसरे समाज में मर्यादा नहीं समझी जाती हो। उदाहरण के लिए कुछ समुदायों में महिलाओं का सिर न ढकना अमर्यादा माना जाता है जबकि अन्य समुदायों में महिलाओं का अपनी टाँगे न ढँकना अश्लीलता माना जाता है।

सुरक्षा

हम पर्यावरण से अपनी सुरक्षा के लिए कपड़े पहनते हैं – मौसम की कठोर स्थितियों, धूल, मिट्टी तथा प्रदूषण से बचने के लिए पहनते हैं। हम विभिन्न मौसमों के अनुसार अपने कपड़ों में बदलाव लाते हैं। गर्मी के महीनों में हम हल्के सूती कपड़े पहनते हैं और चिलचिलाती धूप से अपनी सुरक्षा करने के लिए सिर ढकते हैं, जबकि सर्दी के मौसम में अपने बचाव के लिए कई ऊनी कपड़ों से स्वयं को ढँककर रखते हैं।

कपड़े हमें शारीरिक हानि से भी बचा सकते हैं। अग्निशमन कर्मी आग, धुएँ, तथा पानी से सुरक्षा के लिए विशेष प्रकार की पोशाक पहनते हैं, बहुत से खेलों जैसे कि फुटबॉल, हॉकी और क्रिकेट के लिए ऐसी पोशाकों की आवश्यकता होती है जो कि खिलाड़ियों की सुरक्षा के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाता है। आपने आर्म गार्ड, लेग गार्ड्स, रिस्ट बैंड आदि देखे होंगे जिन्हें खिलाड़ी सामान्य वेशभूषा के साथ-साथ विशेष सुरक्षा के लिए पहनते हैं।

क्रियाकलाप 1

क्या आप ऐसे कपड़ों के बारे में बता सकते हैं जिनकी आवश्यकता बारिश के मौसम में होती है? इस मौसम में किस प्रकार के वस्त्र, पोशाक और सहायक वस्तुओं की आवश्यकता होगी? एक सूची बनाएँ और मित्रों के साथ चर्चा करें।

सामाजिक स्तर और प्रतिष्ठा

कपड़े प्रतिष्ठा के प्रतीक भी हो सकते हैं। यह सही है कि आप व्यक्तियों के पहनावे से लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का पता लगा सकते हैं। आपने कुछ ऐतिहासिक फ़िल्मों में

देखा होगा कि राजा और दरबारियों के कपड़े आम जनता के कपड़ों से बिल्कुल भिन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की पहचान के संदर्भ में सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा की भावना और पहनावे का तरीका शामिल है जिसके द्वारा व्यक्ति के स्तर और प्रतिष्ठा का पता लगाया जा सकता है। भारत में त्योहारों और महत्वपूर्ण पारिवारिक उत्सवों में लोगों द्वारा पहने गए कपड़े उनकी सामाजिक स्थिति को परिलक्षित करते हैं।

तथापि, जैसे-जैसे उचित कीमतों पर अधिकाधिक फ़ैशनेबुल और आकर्षक कपड़े उपलब्ध हो रहे हैं, आज ज़्यादा से ज़्यादा युवा उन्हें खरीद सकते हैं। इस प्रकार से एक ही प्रकार के कपड़े (टी-शर्ट, जीन्स, सलवार-कुर्ता) सभी आयु और आर्थिक स्तरों के लोगों के लिए उपलब्ध हो जाते हैं, ये भी सामाजिक वर्गों को समान धरातल पर लाने का कार्य करते हैं, जो प्रजातांत्रिक समाज में सामाजिक समानता की दिशा में एक कदम है।

शृंगार

आप कपड़े क्यों पहनते हैं, इसलिए कि आप आकर्षक दिखाई दे सकें? जी हाँ, हम अच्छे कपड़े अपनी उपस्थिति को बढ़ाने के लिए पहनते हैं। शरीर को सजाना-संवारना और शृंगार करना पुरुषों और महिलाओं सभी की चाहत होती है और कुछ हद तक सभी समाजों में देखी जा सकती है। कान छिदवाना, नाखून पॉलिश लगाना, गोदना, चोटी और जूड़ा बाँधना अभी तक प्रयुक्त होने वाले शारीरिक सज्जा के रूप हैं। प्रत्येक प्रकार के शृंगार की कामना समाज द्वारा निर्धारित होती है।

बाजार में विविध प्रकार के कपड़े उपलब्ध हैं जिनमें से अधिकांश का उपयोग पहनावे और परिधान के लिए किया जाता है। पिछले एक अध्याय (अध्याय 7) में आपने कपड़े (फैब्रिक) की रचना, धागे और प्रकारों तथा उत्पादन के समय की जाने वाली परिसज्जा के बारे में भी पढ़ा। इस प्रकार आप कपड़े की विशेषताओं को उनके विभिन्न उपयोगों और देखभाल की ज़रूरतों के अनुसार संबद्ध कर सकते हैं। कपड़ों और परिधानों के प्रकार का चयन करने में न केवल कपड़े की विशेषताएँ देखी जाती हैं बल्कि कपड़े के फ़ैशन (प्रचालन) और इसकी सहायक सामग्री के ब्यौरों पर भी विचार किया जाता है। पहले कपड़े पहनने के कारणों की चर्चा करने के बाद अब हम कपड़े पहनने की आवश्यकताओं और विभिन्न आयु वर्गों के लिए वेशभूषा के चयन पर विचार करेंगे।

14.2 भारत में वस्त्रों (वेशभूषा) के चयन को प्रभावित करने वाले कारक

पहनावे की आवश्यकताओं का आकलन करना और उनके चयन से संबंधित अंतिम निर्णय करना उस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं, जलवायु और मौसम संबंधी विशेषताओं पर निर्भर करता है जहाँ उनका उपयोग किया जाना है। यह आसान उपलब्धता, सांस्कृतिक प्रभावों और इससे भी अधिक पारिवारिक परंपराओं से भी प्रभावित होता है। सामान्य तौर पर वे कारक जो कपड़े के चयन को प्रभावित करते हैं उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है –

नवीन पाठ्यक्रमानुसार

वस्त्र विज्ञान एवं परिधान का परिचय

डॉ. मंजु पाटनी

स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा

इस परिभाषा को इस प्रकार भी समझा जा सकता है—

तन्तु ——→ सूत्र (धागा) ——→ वस्त्र ——→ पहनने योग्य वस्त्र

(Fibres) ——→ (Yarn) ——→ (Fabric) ——→ (Textile).

अर्थात् सर्वप्रथम तन्तुओं को मिलाकर बटा जाता है फिर उनका सूत तैयार किया जाता है और सूत को बुनकर कपड़ा बनाया जाता है जो कि पहनने के काम आता है।

वस्त्र तन्तु विज्ञान का महत्व
(Significance of Textile Fibre Science)

हौलेन, सेडलर एवं लेंगफोर्ड (Hollen, Saddler & Langford) के अनुसार, "प्रत्येक व्यक्ति जन्म से मृत्यु तक वस्त्र तन्तु से घिरा रहता है। हम वस्त्र तन्तु के उत्पाद पर चलते हैं और पहनते हैं, हम वस्त्र आच्छादित कुर्सी और सोफा पर बैठते हैं, हम वस्त्र के ऊपर और नीचे सोते हैं, वस्त्र तन्तु हमें सुखाते हैं या हमें शुष्क रखते हैं, वह हमें गर्म रखते हैं, और हमें सूर्य, अग्नि और संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करते हैं।"[1]

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि वस्त्र हमारे जीवन हेतु कितने महत्वपूर्ण हैं और वस्त्र के बिना जीवन की हम कल्पना नहीं कर सकते।

'मानव का वस्त्रों से बड़ा अटूट सम्बन्ध है।' वस्त्रों को मानव से और मानव को वस्त्रों से प्रथक करना सम्भव नहीं है। **'वस्त्रों का सामाजिक मूल्य तो है ही, वस्त्र मानव सभ्यता व संस्कृति के भी प्रतीक होते हैं।'** इतिहास साक्षी है कि जैसे-जैसे मानव सभ्यता व संस्कृति का विकास होता गया है, वस्त्रों की किस्म व स्वरूप भी तदनुसार परिवर्तित व परिष्कृत होता गया। आदिम युग में मानव घास, लता, पत्ते, मृत जानवरों की खाल आदि से ही अपने शरीर को मात्र आवृत्त कर लेने में सन्तुष्ट हो जाता था। आज वस्त्र निर्माण कला अपने चरमोत्कर्ष पर है। मानव नित्य नए अनुसन्धानों से आधुनिकतम रेशों से निर्मित परिधानों से अपने रूप को आकर्षक बनाने में प्रयुक्त करता है। आज परिधान का प्रयोग एक शारीरिक आवश्यकता ही न मानकर अपने व्यक्तित्व की **'अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम'** बन गयी है। व्यक्ति के मूल्य भी इससे प्रभावित होते हैं।

वस्त्रों की आवश्यकता भोजन व मकान की आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण है। **'परिधान शारीरिक आवश्यकताओं को सन्तुष्टि प्रदान करते हैं।'** वस्त्र गर्मी के मौसम में शीतलता प्रदान करने तथा सर्दी के मौसम में उष्णता प्रदान करने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार वर्षा के दिनों में आर्द्रता व गीलेपन से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

'वस्त्रों का सामाजिक व मनोवैज्ञानिक महत्व भी है।' वस्त्र किसी भी फैशन व शैली के अनुरूप हों, हमारे समाज व समूह द्वारा एक खास किस्म के परिधान ही स्वीकारे जाते हैं। परिधान और सामाजिक स्थिति के मध्य एक अन्तर्सम्बन्ध होता है। उपयुक्त वस्त्र समुदाय में उपयुक्त स्थान प्रदान करने में सहायक होते हैं। माता अपने धार्मिक व सामाजिक समारोह व घर में, बच्चे स्कूल में, खेलकूद के अवसरों पर, पिता ऑफिस व व्यवसाय में उचित वस्त्र पहनते हैं तो समुदाय में परिवार की स्थिति समुन्नत मानी जाती है। अच्छे परिधान समाज या समुदाय में परिवार को मान-सम्मान प्रदान करने में सहायक होते हैं। अतः वस्त्र का उत्तम चुनाव प्रत्येक गृहिणी का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

यह भी देखा गया है कि अच्छे वस्त्र वाला व्यक्ति सामाजिक कार्यों में अधिक अभिरुचि रखता है। ऐसे व्यक्ति सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इस प्रकार **'सामाजिक योगदान'** (Social Contribution) प्रदान करते हैं। उचित वस्त्र **'व्यक्ति में आत्मविश्वास विकसित करने'** (Develop self confidence) में सहायक सिद्ध होते हैं।

'व्यक्तित्व को निखारने का कार्य' सम्भवतः वस्त्रों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। शारीरिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर हो ऐसा आवश्यक नहीं है, पर उचित परिधान पहनकर वह आकर्षक बन सकता है (Perhaps not every one can be beautiful but certainly every one can good looking)।

---

1. "Everyone is surrounded by textiles from birth to death we walk on and wear textile products, we sit on fabric-covered chairs and sofas, we sleep on and under fabrics textiles dry us or keep us dry, they keep us warm and protect us from the sun, fire and infection "**Hollen, Saddler & Langford**, "*Textiles*," V Edition. (Collier Macmillan international Edition, 1979, P.No. 2.)